E-paper : www.expressnewsindia.com

एक्सप्रेस न्यूज

■ भोपाल ■ बुधवार ■ 22 अगस्त 2012

मरणान्मुक्ति/पुस्तक समीक्षा) भक्ति और ज्ञान का संगम है पुस्तक

विनीत खरे

भारतीय परंपराओं में शास्त्र आधारित मान्यताएं हजारों वर्षों से चली आ रही कि काशी के पांचकोस की परिधि में मृत्यु पाना, जीव का सौभाग्य सूचक है और मान्यता है कि वहां जो भी मृत्यु को प्राप्त होता है वह जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। काशी मरणान्मुक्ति के रचयिता मनोज ठक्कर तथा रश्मि छाजेड़ हैं, जिनने इस अनुपमेय ग्रन्थ में विभिन्न शास्त्रों का निचोड़ पाठकों के समक्ष विविध सुरुचिकर व्यंजनों के रूप में परोसा है। पढ़ने वाला उपन्यासिक पद्धति में प्रस्तुत सामग्री का सांगोपांग अध्ययन करने के बाद सृष्टि के उद्भव, स्थिति और संहारकर्ता स्वयंभू भगवान शिव के अनेक रूपों का दर्शन करते हुए उपन्यास के कथानकों कश्य और अकश्य के बीच वैतरिणी गंगा में डूबता-उतराता है और उस परम सत्य को जान पाता जिसमें मान्यता है कि सृष्टि के कण-कण का निर्माण शिव ही करते हैं और सृष्टि के अंत में समूची सृष्टि उन्हीं शिव रूप में समा जाती है। काशी मरणान्मुक्ति के कत्थ 69 अध्यायों और 502 पृष्ठों में वर्णित है, उनका नामक महा नायक चांडाल के रूप में पला है जिसकी मां उसे जन्म लेते ही मणिकर्णिका घाट के श्मशान की जलती चिताओं के समीप छोड़ जाती है, महा कोई दिव्यात्मा था, फन फैलाये नागदेव उसकी रक्षा करते रहे अन्यथा श्मशान के कुत्ते और सियार उसकी बोटी-बोटी नोंच-नोंच कर खा जाते, वही महा आगे चलकर हरिद्वार, यमनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ की यात्रा करता हुआ द्वादस ज्योतिर्लिंगों के दर्शनों के माध्यम से शिव के विभिन्न रूपों से परिचित होता हुआ अंत में काशी में उसकी जीवनयात्रा जहां से प्रारंभ हुई थी वहीं काशी विश्वनाथ में विलीन होकर परम विश्रांति पा जाता है। पूरी यात्रा, पूरा चलचित्र एक कथा में पिरोने वाले मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ के बारे में यही कहा जा सकता है जो रामचरित मानस में संत तुलसी ने देखने की कला बतलाई, प्रसंग था-विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण को राजा दशरथ से मांग कर ले जाते हैं और उनकी खबर तब मिली, जब धनुष यज्ञ में राम ने धनुष तोड़ा, विवाह की सूचना देने जनकपुर के दूत, राजा जनक का पत्र लेकर आते हैं। राज प्रासादों की परंपरा से हटकर राजा दशरथ दूतों को अपने पास बुलाकर अपने पुत्रों की कुशलता पूछते हुए कहते हैं।

भैय्या कहहु कुशल दोउ बारे, तुम नीके निज नयन निहारे।

क्या तुमने मेरे पुत्रों को देखा है, देखा है तो क्या अच्छी तरह से देखा है, अपनी आंख से देखा है, देखा है तो बताओ। दूत हंस पड़ते हैं, प्रश्न पर प्रश्न, अरे कोई दूसरों की आंख से देखता है क्या है, पर प्रेम विह्वल दशरथ का पूछना नीके निज नयन शब्दों में यही सूत्र है अपनी आंख से अच्छी तरह देखना, दूतों का उत्तर अटपटा, अरे आपके पुत्रों को जबसे देखा है, उनके अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता, ''अब न आंख तर आवत कोउ'' वास्तव में लेखकद्वय ने इसी पद्धति से काशी, विश्वनाथ के विभिन्न स्वरूपों को बहुत अच्छी तरह अपनी आंखों से देखा और इतना गंभीर विषय पाठकों के लिए बड़े भाव पूर्ण ढंग से सम्पूर्ण विद्वता के साथ प्रस्तुत करके हिन्दी के साहित्याकाश में ध्रुव तारे की तरह सदा-सदा के लिए चमकता हुआ तारा बना दिया। काशी विश्वनाथ की निगाहें मणिकर्णिका श्मशान पर टिकी हैं, यशोदा-राघव संतति विहीन हैं, उन्हें बिन्दु-माधव के आशीर्वाद से बालक मिल जाता है ऐसा वैसा बालक नहीं पूर्ण प्रकाशित जिसे जन्म लेते ही एक तरह काशी विश्वनाथ की कृपा की सुगंध दूसरी तरफ ताजे मृत देह के जलने की 'नीम के तेल में लहसुन भूंजने जैसी गंध', दोनों ही समान रूप से अवगुंठित रूप से परम विश्रान्ति का संदेश देती है।

लेखक की कल्पनाशीलता का सृजन ऐसे होता है, वह अग्नि हो है जो निशा में जागती है, निश्चित ही अंधकार में भी कोई चेतन तत्व डोलता भी है बोलता भी है, मानव जब साधना से स्वयं की आत्मा से परिचित होता है, उसी घड़ी देह भान से मुक्त हो जाता है। वही मरण भी है एवं काशी मरणान्मुक्ति भी। लेखक ने स्पष्ट किया कि काशी मरणान्मुक्ति ग्रन्थ की रीढ़ की हड्डी शिव पुराण है। अन्य पुराण इसके अंग-प्रत्यंग हैं। भगवान शिव, काशी में मृत्यु पाने वाले को तारक मंत्र देकर मुक्त करते हैं।

कहानी यशोदा और राघव की गरीबी में कथानायक महा को पालती है, इस्माइल चाचा राघव को अपनी बड़ी नाव दे देते हैं, जिससे वह रामनगर से श्मशान के लिए लकड़ी लाने का कार्य करके एक हिस्सा, इस्माइल चाचा जैसे संत स्वरूप को देते हैं और इस्माइल चाचा शहनाई की सुरीली तानों के माध्यम से श्मशान की भयावह नीरवता को सुरों की सुंदरता से विरोधाभासी तत्वों का मेल कराकर शिव के एकत्व को प्रतिपादित करते रहते हैं। महा धीरे-धीरे बड़ा होने लगता है पहले राघव चल बसे, महा मुखाग्नि देकर पुत्र दायित्व निभाता है। कालान्तर में यशोदा भी पंचतत्व में विलीन होकर मुक्त हो जाती है, महा अकेला, इस्माइल चाचा के फकीरी अंदाज से कबीर के संदेश गाने लगता है और ध्यान में खोने लगता है।

हर अध्याय के अंत की लाइन '' पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं'' कवि ही उसे भिन्न-भिन्न रूपों में कभी तुलसी, कभी कृष्ण, कभी राम, कभी शिव के तो कभी क्षीर सागर में शेष शैय्या पर लेटे विष्णु से परिचित कराते हैं और अंत में यही कहते हैं कि '' पर याद कराते हैं तेरा गुरु नहीं'' जिसका आशय केवल यही परम सत्य है कि शिव ही परम गुरु हैं, बिंदु से प्रकृति पूरी सृष्टि और अंत में पुनः बिंदु बनकर शिव से एकाकार हो जाते हैं, द्वैत से अद्वैत तक की यात्रा का अंत महा के शिव से एकत्व के रूप में होती है।

राघव यशोदा महा को घाट-घाट चलते पंचगंगा, बिंदु-माधव मंदिर में पुत्र के लिए मंगल की याचना के साथ जाते हैं, पास की मस्जिद वाली गली में महा मचलता है ठीक उसी तरह जैसे कस्तूरी मृग सुगंध के लिए मचलता है, फिर चंदन की सुगंध के बीच काल भैरव मंदिर पहुंचते हैं जो शिव का अघोर रूप है।

शिशु के शांत चेहरे से प्रकाश फूट रहा था मानो चिता भस्म प्रेमी त्रिपुंडधारी काशी विश्वनाथ स्वयं इस नवजात शिशु का रूप ले अवतरित हुए हों। दशाश्मेध घाट पर फाफामऊ श्मशान जहां हरिश्चंद घाट पर जलती चिताओं को देख महा खिलखिला उठा, पंचकोसी काशी की प्रदक्षिणा, मणिकर्णिका घाट से ललिताघाट मीरघाट अस्सी संगमेश्वर के दर्शन लोलार्क कुण्ड की एक सीढ़ी पर महा कांपने लगता है, कंदवा गांव में रात गुजारकर प्रातः कनवा पोखर में स्नान फिर यशोदा मोक्षेश्वर के दर्शन, रामकृष्ण शिव के दर्शन, जलती मशालों में रामलीला अंत में वरुणा घाट के किनारे रामेश्वरम पहुंचे, आदिकेशव मंदिर में काले पत्थर से बनी केशवादित्य श्रीहरि की मूर्ति को महा हाथ जोड़े निहार रहा था, इन्हीं भगवान श्रीहरि के अंशावतार रामानंद के शिष्य थे कबीर।

आदिकेशव मंदिर में नारायण का मूर्तिपूजन वहीं यशोदा को पूर्वजन्म की स्मृतियां जहां पति हरिश्चंद ने ब्राह्मण के हाथ पत्नि-पुत्र को बेचा और स्वयं चांडाल का दासत्व स्वीकारा।

पूरी कथा आगे बढ़ती है शिव के अंश तैलंग महा के गुरु की प्रेरणा से प्रयाग से गोमुख की यात्रा धराशु को पार कर यमुनोत्री, हिम झील जहां यमुना का उद्गम था कालिंदी पर्वत की गोद में यमुना शैश्वावस्था में थी, गंगोत्री से गोमुख जहां महात्मा मिले, यात्रा में शिष्य बुद्धेश साथ हरिद्वार से हिमालय में छै माह, उज्जयनी में चार मास, ओंकारेश्वर, अमरकंटक, त्र्यम्बकेश्वर, भीमाशंकर, अश्वात्थामा से मिलने बालपुर में सरन वणिक जो महा को आदिवासियों का उद्धारक मान कर आदिवासियों को बलि परम्पराओं आदि का दर्शन करवाकर उनका जीवन बदलवाता है, भीमाशंकर से घुश्मेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, सोमनाथ, द्वारका, रामेश्वरम फिर अयोध्या और काशी में महासमाधि परम विश्रांति शिवत्व में विलीन, विधि-विधान से समाधि भुतु बाबा और इस्माइल चाचा के आंसू और शिष्य बुद्धेश का करुण, क्रंदन, इस अद्भुत ढंग से प्रस्तुत किया गया है कि पाठक आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता। शिव के अंश तैलंग के इस चेले ने भी कबीर की तरह स्वयं की चदरिया ज्यों की त्यों धर दी थी और अंत में वही पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं।

कथा की रचना और विस्तार के बारे में पुस्तक समीक्षा बहुत छोटी है, पर उपसंहार करते करते यह लिखा जा सकता है कि कोई भी रचना कितनी भी गंभीर क्यों न हो अगर विषयवस्तु को कठिन शब्दों में पिरोया जाता है तो वह सीमित पाठकों की क्षुधा ही शांत कर पाती है, 'रामायन सत कोटि अपारा' रामायणें अपार हैं, पर जो स्थान तुलसी की रामायण को प्राप्त है वह किसी अन्य को नहीं जिसे घर-घर में मामूली हिन्दी पढ़े भीसमझ लेते हैं, उसका कारण सीधी सरल बोलचाल की भाषा है, जिसने उस ग्रन्थ को अमरता ही नहीं प्रदान की बल्कि वेदों, शास्त्रों, पुराणों का समस्त रस निकालकर जनवाणी बना दिया, अगर लेखक द्वय ने हिंदी के सरल शब्दों में इसे लिखा होता तो शायद यह हर उस पाठक के लिए बोधगम्य हो जाती जो शिव के रूप में अमृत को असीम को ससीम बनाकर अपनी अंजलि में भरकर पी पाता।

हिन्दुस्थान समाचार सेवा